जैसे - जैसे घटती है Heart बड़ा होता है। जैसे-जैसे Heart बड़ा होता है धड़कन धीरे हो जाती है। पहले महीने में शिशु की धड़कन 1 मिनट में 140 बार धड़कता है। 6 वर्ष में यह घटना 1 मिनट में 100 हो जाती है।

शैशवावस्था में मानसिक विकास :- जन्म के समय पहला सप्ताह :-

जॉन लॉक - " नवजात शिशु का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है। जिस पर वे अपने अनुभव लिखता है। फिर भी शिशु जन्म से कुछ - ना - कुछ कार्य अवश्य ही जानता है।

* ~~दूसरा सप्ताह :- शिशु आवाज सुनने सिर घुमाता है।~~
* ~~दूसरा सप्ताह :-> शिशु प्रकाश चमकीली वस्तु को ध्यान से~~
* दूसरा सप्ताह :- शिशु प्रकाश चमकीली वस्तु को ध्यान से देखता है।
* ~~दूसरा~~ पहला माह :- शिशु कष्ट होने पर जोर से चिल्लाता है तथा हाथ से पकड़ने वाली चीजों को पकड़ने का प्रयास करता है।
* दूसरा माह :-> शिशु आवाज सुनने के लिए सिर घुमाता है।
* चौथा माह :- शिशु सभी व्यंजनों की ध्वनि करता है, दी जानेवाली वस्तु को दोनों हाथों से पकड़ता है, खोए हुए खिलौने को खोजता है।

Scanned with CamScanner

जैसे - जैसे घटती है Heart बड़ा होता है। जैसे - जैसे Heart बड़ा होता है धड़कन धीरे हो जाता है। पहले महीने में शिशु की धड़कन 1 मिनट में 140 बार धड़कता है। 6 वर्ष में यह घटना 1 मिनट में 100 हो जाती है।

शैशवावस्था में मानसिक विकास ! — जन्म

* के समय पहला सप्ताह ! — जॉन लॉक - " नवजात शिशु का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है। जिस पर वे अपने अनुभव लिखता है। फिर भी शिशु जन्म से कुछ - ना - कुछ कार्य अवश्य ही जानता है।

* ~~दूसरा सप्ताह ! — शिशु आवाज सुनने के लिए सिर घुमाता है।~~

* ~~दूसरा सप्ताह ! → शिशु प्रकाश चमकीली वस्तु को ध्यान से~~

* दूसरा सप्ताह ! — शिशु प्रकाश चमकीली वस्तु को ध्यान से देखता है।

* ~~दूसरा~~ पहला माह ! — शिशु कष्ट होने पर जोर से चिल्लाता है तथा हाथ से पकड़ने वाली चीजों को पकड़ने का प्रयास करता है।

* दूसरा माह ! → शिशु आवाज सुनने के लिए सिर घुमाता है।

* चौथा माह ! — शिशु सभी व्यंजनों की ध्वनि करता है, दी जानेवाली वस्तु को दोनों हाथों से पकड़ता है, खोए हुए खिलौने को खोजता है।

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास !-

* जन्म के समय बच्चों में कोई संवेग नहीं होते है। जन्म के समय 0 संवेग होता है। वह केवल उत्तेजना का अनुभव करता है। उत्तेजना के कारण ही एक माह का शिशु में कुछ अनुभव उत्पन्न हो जाते हैं। दो वर्ष के आयु में संवेग विकसित हो जाते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने शिशु के अंदर निम्न चार संवेग बताया।

1) प्रेम, 2) भय, 3) क्रोध, 4) भूख। ये तीनों संवेग बच्चों के अंदर सामान्य अवस्था में होने चाहिए। तभी बच्चा संवेगात्मक बच्चा कहलाता है।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास।

* जन्म के समय शिशु ना तो सामाजिक प्राणी होता है और ना तो असामाजिक प्राणी होता है। इस स्थिति में बच्चा बहुत समय तक नहीं रहता।

अरस्तु "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी। जन्म से पूर्व बालक अप्रत्यक्ष रूप से समाज से प्रभावित होता है। जन्म लेने के पश्चात भी समाज के अभाव में उसका अस्तित्व बना नहीं रह सकता।" आरंभ में बालक का समाज उसकी माता होती है। चार-पाँच सप्ताह बाद माता के चेहरे को देखता है। तीन-चार महीने के बाद उसका सामाजिक विकास होने लगता है। इसका प्रमाण यह है कि रोता हुआ या हँसता

Scanned with CamScanner

v.v.I

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास !—

1) भार !— बाल्यावस्था में बालक का भार अत्यधिक वृद्धि करता है। 12 वर्ष के अंत में उसका भार 80-95 Pb (पौंड) होता है। 9 या 10 वर्ष में बालकों का भार बालिकाओं से अधिक हो जाता है। 10 वर्ष के बाद बालिकाओं का भार अधिक होने लगता है।

2) लंबाई !— बाल्यावस्था में 6-12 वर्ष के बच्चे की शारीरिक लंबाई कम बढ़ती है। इन वर्षों में लंबाई 2 या 3 इंच।

3) सिर एवं मस्तिष्क !— बाल्यावस्था में सिर का आकार में परिवर्तन होते हैं। 5 वर्ष की आयु में सिर 90% प्रौढ़ आकार में हो जाता है। 10 वर्ष की आयु में 95% सिर विकसित हो जाता है। 9 वर्ष की आयु में बालक के मस्तिष्क में परिवर्तन होते हैं। तथा शरीर के कुल भार का 90% मस्तिष्क होता है।

4) हड्डियाँ !— बाल्यावस्था में हड्डियों की अस्थिकरण के कारण हड्डियों में दृढ़ता, वृद्धि, आती है। इस अवस्था में हड्डियों की कुल संख्या 270 से बढ़कर 350 हो जाती है।

5) दाँत !— लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक के दूध के दांत गिरने लगते हैं। गिरने के बाद स्थायी दाँत आने लगते हैं।

15/38
Scanned with CamScanner

5) ईर्ष्या, 6) जिज्ञासा, 7) स्नेह, 8) प्रफुल्लता।
9) निराशा, 10) आनंद, 11) उग्रता।

1) उग्रता :- संवेगों की उग्रता के कारण बाल्यावस्था में विकास की गति धीमी पड़ जाती है।

2.) ईर्ष्या :- इस उम्र में लड़के - लड़कियों दोनों में ईर्ष्या की भावना देखी जाती है। सभी एक - दूसरे से चिढ़ते हैं, झूठे आरोप लगाते हैं, तिरस्कार करते हैं, निंदा करेंगे।

3) निराशा :- परिवार में, विद्यालय में अनुशासन होने के कारण बाल्यावस्था में निराशा की भावना होने लगती है।

* बाल्यावस्था में सामाजिक विकास :-

1) सामाजिक भावना :- इस अवस्था में बालक और बालिकाओं में सामाजिक जागरूकता, चेतना, समाज में रुचि आदि तत्व पाए जाते हैं। सामाजिक भावना का विकास सबसे ज्यादा विद्यालय में, परिवार में, नए मित्र बनाने में सामाजिक कार्यों में रुचि होती है।

2) आत्मनिर्भरता :- बाल्यावस्था में बालक स्वतंत्र मानकर आत्मसम्मान प्राप्त करने कार्य करता है। वे आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करते हैं। परिवार को छोड़कर बालकों के साथ खेलने, क्रियायें करने, निर्णय लेने लगते हैं।

18/38

Scanned with CamScanner

FEBRUARY • 2019

24 Thursday JANUARY WK 04 • 024-341

1) भोजन !— संतुलित आहार पौष्टिक खाना, माँ का प्रथम दूध, शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम बनाता है।

2) परिवार की स्थिति !→ परिवार की सामाजिक स्थिति, आर्थिक-स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति। ये तीनों शारीरिक विकास को प्रभावित करते हैं।

3) दिनचर्या !→ बालक की दिनचर्या उसके शारीरिक विकास पर बहुत प्रभाव डालता है। Ex — खाना, नहाना, रहन-सहन आदि।

* किशोरावस्था में शारीरिक विकास !—

1) भार !— किशोरावस्था में बालकों का भार बालिकाओं से अधिक बढ़ता है। इस अवस्था के अंत में बालकों का भार बालिकाओं से लगभग 25 Pb अधिक होता है अंत में।

2) लंबाई !→ इस अवस्था में बालक और बालिकाओं दोनों का बढ़ती है। बालक की लंबाई 18 तक और उसके बाद भी बढ़ती है। बालिका अपनी अधिकतम (18-25) लंबाई पर लगभग 16 वर्ष की आयु में अधिकतम लंबाई तक पहुँच जाती है।

3) सिर और मस्तिष्क !→ इस अवस्था में सिर एवं मस्तिष्क का विकास जारी रहता है। 15 एवं 16 वर्ष की आयु में सिर का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। मस्तिष्क का भार 1200 से लगभग 1400g के बीच होता है।

4) दाँत !→ इस अवस्था में प्रवेश करने के बालकों एवं बालिकाओं के लगभग सभी दाँत निकल जाते हैं। यदि उनके प्रज्ञादन्त (wisdom teeth) (बुद्धिदाँत) निकलने प्रारंभ हो जाते हैं।

2019

19/38

Scanned with CamScanner

5) हड्डियाँ !→ इस अवस्था में अस्थिकरण की प्रक्रिया होती है। इस अवस्था में अस्थिकरण पूर्ण हो जाती है। हड्डियों में पूरी मजबूती आ जाती है।

6) अन्य अंग !→ इस अवस्था में मांसपेशियों का विकास तीव्र गति से होता है। 12 वर्ष की आयु में कुल भार का 33% होता है। 16 वर्ष की आयु में 44% होती है। दिल की धड़कन 1 मिनट में 72 बार धड़कता है। बालकों का सीना और कंधे चौड़े हो जाते हैं। बालिकाओं में वक्षस्थल, कुल्हे चौड़े हो जाते हैं। बालकों में आवाज परिवर्तन हो जाते हैं। बालकों की आवाज कठोर तथा बालिकाओं में मधुर हो जाती है।

%- किशोरावस्था में मानसिक विकास !—

1) बुद्धि का अधिगम विकास !— किशोरावस्था (13-19) में बुद्धि का अधिकतम विकास हो पाता है। बुद्धि सीखने की प्रक्रिया है। यह विकास सामान्य के कारण होता है।

2) मानसिक स्वतंत्रता !→ किशोरावस्था में मानसिक विकास स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहता है। वह रूढ़िवादी का प्रतीक होता है।

3) मानसिक योग्यता !→ किशोरावस्था में मानसिक योग्यता का स्वरूप निश्चित हो जाता है। उसके अंदर सोचने, समझने, अंतर करने